यज्ञ के निमित्त किये जाने वाले कर्मों के अतिरिक्त अन्य कर्मों में लगा हुआ मनुष्य ही कर्मों से बन्ध जाता हैI इसलिये आसक्ति रहित होकर यज्ञ क़े निमित्त ही कर्म करो। अर्थात यज्ञ के फल को भी ग्रहण करने से पूर्व अर्पण करो, अन्यथा तुम चोर कहलाओगे। यदि यज्ञ से बचे हुए अन्न को खओगे तो पापों से मुक्त हो जाओगे, पर यदि शरीर के पोषण के लिये खाओगे तो पाप को खाओगे (10)।

तत्पर्य यह है कि यज्ञीय आचरण करने वालों का मन अनियमित दिशाओं में भटकना छोड़कर सुनिश्चित्त आधार प्राप्त कर लेता है। उनका पूरा जीवन ही यज्ञ रूपी हो जाता है। उनकी सभी अभिलाषाओं को देवता पूर्ण करतें हैं। उन्हें उच्च कोटि का आत्मीय आनंद प्राप्त होता है। वे जीवन में जब भी किसी परेशानी का अनुभव करते हैं, स्वयं में ही स्वयं का होम करते हैं। एसे मनुष्यों का सम्पूर्ण जीवन यज्ञमय हो जता है।

संस्कार विधि में ऋषी दयानन्द के शब्द हैं–
मनुष्यों के योग्य है कि सब मंगलकार्यों में अपने और पराये कल्याण के लिये यज्ञ द्वारा ईश्वरोपासना करें। इस हेतु सुगंधित होम सामग्री की आहुती यज्ञ कुंड में देवें। इसी प्रकार जीवन रूपी यज्ञ की उत्कृष्टता रूपी अग्नि में सद्भावना, सद्गुणों, श्रद्धा, सदाचार, लोककल्याण, रूपी होम की आहुती करेंगे तो संसार की सभी प्रयोगशालाएँ एवं निर्माणशालाएँ स्वतः ही यज्ञशलाएँ बन जाएँगी। सभी का जीवन सुख, शन्ति और समृद्धि से परिपूर्ण होकर यज्ञमय हो जाएगाI

उपसंहार

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि मनुष्य जीवन में सुख-शन्ति प्राप्त करने का, उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने व जीवन के उद्देश्य को समझ कर तदनुरूप कार्य करने का एक सर्वोच्च मार्ग यज्ञमय जीवन का अनुपालन ही है। जो जीवन के इस आध्यात्मिक रहस्य को समझ लेता है, वह रोग, संताप, शोक से मुक्त हो जाता है। यज्ञमय जीवन का अनुसरण करना ही चिरस्थायी एवं समग्र आरोग्य की उपलब्धि का साधन है। यह जीवन यज्ञ का एक प्रकार का अभ्यास है। यह यज्ञ स्व्यं द्वारा, स्व्यं के ही लिये किया जाता है, इसमें स्व्यं का शरीर ही होमना पड़ता है। किन्तु इस यज्ञ के परिणाम स्वरूप अनेकों का विस्तार सम्भव है। मानव से महामानव तक का परिवर्तन यज्ञमय जीवम के आचरण के माध्यम से ही संभव हैI

संदर्भ

1. Sharma Shriram. Satyug Ki Vapasi (Revival of Satyug). Revised Edition. Yuga Nirman Yojana Vistaar, Gayatri Tapobhumi, Mathura, 2014.
2. Brahmavarchas, editor. *Gayatri Aur Yagya Upayogita aur Aavashyakta*, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: page 1.1
3. Brahmavarchas, editor. *Jeewan Yagna Ki Reeti Neeti*, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: p. 2.43
4. Negi Poonam. *Shriram Ke Jeewan Me Yagna*. In Bhartiya Dharohara. October 18, 2018 Available from: https://www.bhartiyadharohar.com/
5. Sharma Shriram, editor. *Maanava Jeewan Kaa Aadarsh Sanyam*. Akhand Jyoti. 1954;02:04 http://literature.awgp.org/akhandjyoti/1954/February/v2.4
6. Brahmavarchas, editor. *He Pavitra! Apne Ko Yagna Me Jhonk De*, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: Page 2.48
7. Brahmavarchas, editor. *Yagna dwara deva Ka Aayog*, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: page 2.51
8. Sharma Shriram, editor. Yajurveda Samhita 3/63, Revised edition, Yuga Nirman Yojana Vistaar, Gayatri Tapobhumi, Mathura; 2014: p. 3.10
9. Brahmavarchas, editor, *Sara Jeevan Yagnamaya Bane*, In: Yagna ka Gyan Vigyan (Pt. Shriram Sharma Acharya Vangmay 25). Second Edition, Akhand Jyoti Sansthan Mathura; 1998: p. 2.44
10. Shrimad Bhagwat Gita 3/9-12. GitaPress, Gorakhpur Samvat, 2065